Chapter-7

सप्तम अध्याय

उपसंहार

सामान्य प्रवृत्तियां
विभिन्न प्रवृत्तियां
भावी संभावनाएं
निष्कर्ष ; सारांश

अर्वाचीन काल के दो समान धर्मा प्रेम और सौंदर्य के कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन कर चुकने के पश्चात् हम जिन निष्कर्षों पर पहुंचते हैं ; वे हिन्दी तथा गुजराती काव्यधारा की प्रवृत्तियों को भारतीय साहित्य के व्यापक धरातल पर उजागर करते हैं ।

व्यक्तित्व की दृष्टि से हमारे दोनों विवेच्य कवि अतीव लोकप्रिय थे । यहां तक कि उनके नाम से युग का नाम प्रचलित हुआ दोनों भी नये युग के निर्माता माने गये । समानता यह है कि दोनों को जीवन में संघर्ष झेलने पड़े ; लेकिन प्रसाद की अपेक्षा न्हानालाल का जीवन सुखी और समतल था । न्हानालाल के जीवन में उच्छृंखलता थी जिससे पढने लिखने में मन नहीं लगता था । काशीराम जैसे योग्य गुरु ने उनको दिव्य और महान बना दिया । प्रसाद जी को अनेकों संघर्ष झेलने पडे ; फिर भी उन्होंने परिस्थितियों से समझौता नहीं किया । वे शांत और सौम्य प्रकृति के थे ; साथ ही वे स्वभाव से गंभीर और अन्तर्मुखी प्रकृति के व्यक्ति थे । उनकी यह विशेषता बाहर से मौन रहकर अन्तर्द्वन्द्वों का सामना करने के लिए उन्हें प्रवृत्त करती रही । प्रसाद के अन्तर का यह ज्वालामुखी उनकी कृतियों में रसमय होकर प्रस्फुटित हुआ है । न्हानालाल की प्रकृति इस दृष्टि से भिन्न रही । दूसरे उन्हें दाम्पत्य सुख पूर्ण मात्रा में मिला । प्रसाद को उसका अभाव जीवनपर्यंत बना रहा । न्हानालाल को व्यक्तियों से संघर्ष करना पडा । उल्लेखनीय यह है कि दोनों ही कवि पूर्ण आस्थावादी और पुरुषार्थी थे । न्हानालाल ने कहा है कि -

" जगत् एटलेज कुरुक्षेत्र
जगत् जीवन एटलेज संग्राम खेलना "[1]

ooooooooooooooooo

१ न्हानालाल, अर्धशताब्दिना अनुभव बोल, पृ० ११

दोनों कवियों ने साहित्य सेवा में खूब हाथ बंटाया, गद्य, पद्य, नाटक, निबंध आदि। दोनों भी साहित्यिक लेख लिखने में प्रातःकाल उठकर उसी सुवर्णवेला का समय माँ सरस्वती की आराधना में लगाते थे। प्रसाद जी की रुचि क्रम क्रम से ग्रन्थों को पढ कर बढती गई। उन्होंने शैव दर्शन, वेद, पुरण, इतिहास आदि का गहरा अध्ययन किया था। न्हानालाल ने वैष्णव ग्रन्थों का, पुराणों का और इतिहास का गहरा अध्ययन किया था अर्थात् दोनों भी पुराण वेत्ता और इतिहासज्ञ थे। कवि न्हानालाल ने अपने पूर्ववर्ती कवियों की काव्य रचनाओं का गहरा अध्ययन किया था जैसे – काव्य कौस्तुभ, कुसुम माळा, स्नेह मुद्रा, ललिता दुःख दर्शक नाटक, जया कुंवर (गद्य-ग्रन्थ), वसन्त विजय आदि। कवि ने अपने शब्दों में स्वीकार किया है कि :–

> " गुर्जर महाग्रन्थोंमांथी म्हने घड्यो छे दलपत काव्ये, सरस्वतीचन्द्रे,
> नर्म कविताए : अने एक हिन्दी महाकाव्य प्रवीणसागरे "[1]

कवि न्हानालाल के व्यक्तित्व पर आंग्ल कवि टेनिसन, ब्राउनिंग, अर्नोल्ड आदि का और मार्टिनों का प्रभाव पडा है। प्रसादजी भारतीय ज्ञान और तत्वज्ञान से पूर्णतया प्रभावित थे। उनका अंग्रेजी का अध्ययन न्हानालाल के समान गहरा नहीं था। उनकी यही दृढ मान्यता थी कि भारतीय ज्ञान और तत्त्वज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है। प्रसादजी के साहित्यिक व्यक्तित्व के विषय में आचार्य वाजपेयीजी ने लिखा है कि –

> " प्रसादजी अपने युग के सब से बडे पौरुषवान कवि थे। प्रसादजी का काव्य शक्ति और एक मात्र शक्ति की साधना का एक अविरल प्रवाह है। इसलिए मैं प्रसादजी को हिन्दी का सबसे प्रथम और सब से श्रेष्ठ शक्तिवादी और आनंदवादी कवि मानता हूं। हम उन्हें नवयुग के प्राणों का कवि कह सकते हैं। "[2]

ooooooooooooooooo

१ न्हानालाल, अर्ध शताब्दिना अनुभव बोल, पृ० ३७

२ आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, पृ० २०–२५

यही साम्य कवि न्हानालाल में भी मिलता है । वे भी अपने युग के सब से बडे पौरुषवान कवि थे । पुरुषार्थ, शक्ति और आनंद उनके मुख्य ध्येय थे जो उन्होंने तीव्र भक्ति भावना से प्राप्त किये थे । उनके व्यक्तित्व के विषय में श्री " सुन्दरम् " ने कहा है कि :-

> " कवि की सादगी, आचरण की शुचिता, ब्राह्मणोचित अपरिग्रहवृत्ति, भावनाशील मानस, स्वमानित्व, और विषम परिस्थिति का भी धैर्य और तितिक्षा से स्वागत करने की शक्ति उनके प्रशंसनीय लक्षण है । उनका आतिथ्य और वात्सल्यभाव भी वैयक्तिक नहीं सामाजिक थे । उनमें गुजरात की तत्पदीय संस्कारिता थी । "[1]

इन उदधरणों से यह प्रतीत होता है कि दोनों कवियों के व्यक्तित्व में पर्याप्त साम्य था ; लेकिन जैसे दो प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्य समान होते हुए भी भिन्न होते हैं उसी प्रकार व्यक्तित्व की और विचारों की समानता होते हुए भी भिन्नताएं थीं । कवि न्हानालाल जन्म से ही कवि थे क्योंकि उनके पिता दलपतराम कवि थे । प्रसादजी को साहित्यिक संस्कार जन्म जात रूप में नहीं प्राप्त हुए किन्तु इससे उनके साहित्यिक व्यक्तित्व में कोई अभाव नहीं दृष्टिगोचर होता । इस प्रकार वे स्व पुरुषार्थ और स्वार्जित ज्ञान से सिद्ध कवि हो गये । प्रसादजी जीवन के प्रति आनंदवादी दृष्टिकोण रखते थे किन्तु वह लोकमंगल का आधार लेकर आगे बढा है । उनकी दृष्टि में इतनी तीव्रता थी कि वे सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को तर्कपूर्वक उपस्थित करते थे । वे काव्य-सर्जन की मूलचेतना " प्रेम " को मानते हैं । उनके मतानुसार " काव्य आत्मा की वह संकल्पात्मक अनुभूति है जो रमणीय पद-रचना के माध्यम से व्यक्त हो कर सहृदय को आल्हादित करती है । जनता की निम्नवृत्तियों से खेलना उनकी रुचि को अभिष्ट नहीं ; वे गंभीर है, उच्चाशयी है, सुरुचियों के संस्थापक व नवीन रुचियों के निर्माता है, विधाता है ।[2] प्रसादजी कभी किसी

oooooooooooooooo

१ कवि श्री न्हानालाल स्मारक ग्रन्थ, " सुन्दरम् ", पृ० १३६ अनूदित

२ डा० खंडेलवाल, जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला, पृ० ४६४

संकीर्ण एकांगिता, क्षेत्रीयता व साम्प्रदायिकता के शिकार नहीं हुए। वे केवल परम्परा के ही भक्त नहीं है, उनमें विचार चिन्तन और शैलीगत प्रयोगों के प्रति अशेष उत्साह है। वे आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी है। उन्होंने अतीत से भविष्य तक का एक दीर्घ व विशाल मार्ग खोल दिया है। चिन्तन की उच्च प्रकार की दृष्टि के साथ ही उन्हें मनोविज्ञान का सम्यक् ज्ञान है ; जिसका पूर्ण परिचय हमें " कामायनी " में मिलता है। प्रसाद के काव्य में " प्रेम " और " सौन्दर्य " के माध्यम से सत्य और शिव की भावनाओं से पुष्ट आनंदवाद की आत्मा है। वे विकासशील और उदार सामाजिक प्रवृत्तियों के निरूपक हैं। यह विशेषताएं उन्हें असाधारण व्यक्तित्व से संपन्न पुरुष बनाती हैं। वे मित्रों का स्वागत बड़ी आकर्षक और आत्मीयता से करते थे। उनकी बातचीत में मौलिकता थी। उन्हें शिव-सम्बन्धी भारतीय दर्शन की निष्पत्तियां बड़ी प्रिय थीं। उनकी धार्मिक दृष्टि संकुचित नहीं थी ; वे कृष्ण के चमत्कारपूर्ण चरित्र के ~~प्रशंसक थे~~ प्रशंसक और श्रद्धालु थे। व्यक्तित्व की संपूर्ण जानकारी द्वितीय अध्याय में दी गई है। वे हिन्दी के युग-प्रवर्तक कवि और साहित्यस्रष्टा तो थे ही, एक असाधारण समीक्षक और दार्शनिक भी थे।

वे भारतेन्दुजी की काव्यधारा से परिचित थे। द्विवेदीजी के काव्य सिद्धान्तों पर उन्होंने मनन चिंतन किया था। दोनों काव्य धाराओं की अच्छाइयों और बुराइयों की परख उन्होंने की थी। वे हृदय और मन के पारखी तथा जीवन और जगत के दृष्टा थे। वे भारत की मूल सांस्कृतिक एवं साहित्यिक भावधारा से अवगत थे। उन संस्कारों को उन्होंने अपने व्यक्तित्व के द्वारा नये युग के अनुरूप रचा, जो अत्यंत गौरवशाली है।

उनके प्रेम-काव्य की रचना के मूल में किसी रहस्यमय प्रिय की पवित्र स्मृति उनकी प्रमुख पाथेय और प्रेरणा-स्रोत रही है। " आंसू " का मर्म कवि के वैयक्तिक प्रेम की भूमिका पर उद्घाटित हुआ है। समग्रतः कवि प्रसाद का काव्य उनके समग्र व्यक्तित्व की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति है। उनके काव्य को " मुक्तात्मा

की चिरंतन पुकार " कहा गया है ।

कवि न्हानालाल भी " प्रेम " और " सौंदर्य " के कवि थे वे भारतीय संस्कृति में दृढ मान्यतावाले और राष्ट्रप्रेमी थे । उनकी वाणी, व्यवहार या आचरण में समन्वय था । वे स्पष्टतावादी थे । वे मानवतावादी और विश्व-बंधुत्व की भावना में तीव्रता से माननेवाले थे । वे सुधारवादी थे और जहां जहां उन्होंने सरकारी नौकरी की वहां अनेक प्रकार से सुधार भी स्वप्रेरणा से किये । वे पूर्णरूप से स्वाभिमानी थे और सभा सोसायटियों में हाथ बंटाने का उन्हें शौक था । उनके काव्यों में उनका पूरा-व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित है । वे पूर्ण आशावादी, पुरुषार्थी और गुण कर्म से ब्राह्मण थे । उनको अपने ब्राह्मणत्व का पूर्णरूपेण गर्व था और वे उसे सदैव गुण कर्म से ही श्रेष्ठ मानते थे । कवि का व्यक्तित्व एक उच्च भारतीय नरवीर की तरह था और उन्होंने अपने काव्यों में पूर्ण मानवतावादी और राष्ट्रीय दृष्टिकोण ही अपनाया है । उन्होंने " प्रेम " का उदात्त रूप में वर्णन किया है । इस संबंध में प्रा० रमण कोठारी ने कहा है कि :-

" कविनी कवितामां सुंदरता ने मनोरमतानुं वलण तेमज तेने अनुरूप भाषानुं नजाकतपणुं छे ० तो भव्यतानुं आलेखन अने तेने अनुकूळ तेवी वाणीनी ओजस्वितानुं दर्शन पण साथे साथे भावक ने थाय छे ० एकंदरे कविनी कवितानी वाणी तेजोमय, धोधपेठे दडदडती, क्वचित् धुंधळी अने तेथी ज इन्द्रधनुना रंगो शा रंगो प्रगटावती रंगीन अने चित्ताकर्षक बनी रहे तेवी छे ० कविनी कविता नवीन प्रगल्भ लागे तेवा आकारो उपजावी काढे छे ० कविनुं भावप्रधान काव्य बहुधा रमणीय अने केटलीक वार "भव्य " कोटिनुं छे ०

कल्पनानुं प्राबल्य, संगीतनुं तत्त्व, गीतना मनोहारी ढाळ, आछुं पातळुं अभिनेयतानुं तत्त्व, भावनी भरती, गातां, नाचतां, भावदर्शनमां मदद रूप थई शके तेवां लयहिल्लोळ अने चित्रात्मकता वगेरे कविनी कवितानां

महत्त्वनां लक्षणो छे ।"[1]

उपरोक्त अंश का हिन्दी अनुवाद

कवि की कविता में सौंदर्यग्राह्य वृत्ति और उसके अनुरूप भाषा की कोमल और मधुर अभिव्यक्ति है ; साथ साथ भव्यता का आलेखन और उसके अनुकूल ओजस्विता वाणी की अभिव्यक्ति का दर्शन भी भावुक को होता है । समग्रतः कवि की कविता की वाणी तेजस्वी, जलप्रपात की तरह दौडती, कूदती, क्वचित धुंधली और उसके फलस्वरूप इन्द्रधनु के रंगों जैसी रंगीनी दिखलाती रंगीन और चित्ताकर्षक प्रतीत होती है । कवि की कविता नवीन प्रगल्भ लगे ऐसे आकार उत्पन्न करती है । कवि का भावप्रधान काव्य बहुधा रमणीय और कभी कभी " भव्य " कोटि का भी लक्षित होता है ।

कल्पना का प्राबल्य, संगीत के तत्त्व, गीतों की आकर्षक तर्जे, न्यूनाधिक अभिनेयता का तत्त्व, भावों की प्रचुरता, गाते नाचते भावदर्शन में सहायभूत हो सके ऐसी लयों की तीव्रता और चित्रात्मकता आदि कवि की कविता के मुख्य लक्षण हैं ।

जैसा कि पीछे लक्ष्य किया जा चुका है कि कवि प्रसाद की प्रवृत्ति अंतःमुखी थी । वे अपने काव्यों में जो भी कहते थे वह प्रच्छन्न रूप में, अप्रत्यक्ष रूप में कहते थे । जैसे " आंसू " काव्य में प्रसाद ने प्रच्छन्न रूप में सब कुछ व्यक्त किया है । उसमें भाव गांभीर्य है ; विप्रलंभ की तीव्रता पग पग पर लक्षित होती है । कहीं भी प्रसाद ने स्पष्टतया अपने प्रियतम को बतलाया नहीं है । कवि न्हानालाल की प्रवृत्ति बहिर्मुखी थी और वे जो भी कहना चाहते थे वह स्पष्ट रूप से निःसंकोच कहते थे । उदाहरण के लिये " प्राणेश्वरी ", " कुलयोगिनी ", " लग्नतिथि " आदि काव्यों में बहुत चित्रात्मक शैली में कवि ने अपनी पत्नी माणेकबहन के प्रति

1 प्रो० रमण कोठारी, न्हानालालनो काव्य प्रपात, समापन, पृ० ४०-४१

स्पष्ट रूप से भावनाएं व्यक्त की है । कवि प्रसाद और कवि न्हानालाल का प्रेम-दर्शन रसात्मक, सर्वतोव्यापी जीवनदर्शन के साथ सायुज्य साधता है । इसमें वासना-जन्य प्रेम की उत्कटता नहीं अपितु आनन्द प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा है । कवि न्हानालाल ने उसे " परम प्रेम परब्रह्म " और प्रसाद ने " भूमा का मधुमय दान " कहा है ।

दोनों कवियों ने नारी जीवन की महानता और उपयोगिता समझी थी । प्रसाद ने कामायनी में और न्हानालाल ने अनेक पुटकल काव्यों में नारीजीवन की महत्ता बतलाई है । दोनों की यह तीव्र मान्यता थी कि पुरुष अपूर्ण है, स्त्री अपूर्ण है । पुरुष और स्त्री का सम्मिलन या एकता ही पूर्णता है और इस प्रकार पूर्णता के सूत्र को अपना कर समाज पूर्ण बनता है । दोनों के जीवन की निर्बाध एकता पर ही समाज आधारित है ।

दोनों कविओं के समानता के उपकरण पूर्ववर्ती अध्याय में लक्ष्य किये जा चुके हैं । निष्कर्ष रूप में वे इस प्रकार है -- आशावादिता, मानवता (वैष्णव भावना) राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति के प्रति पूज्य और दिव्य दृष्टि, प्रेम और सौंदर्य की उदात्त भावनाएं, प्राचीन और अर्वाचीन का युगीन मात्रा में समन्वय, नारी की महत्ता, आचरण की दिव्यता, विश्वबंधुत्व की भावना और आनंदवाद ।

व्यक्ति के, समाज के और जगत् के अनेकविध व्यावहारिक प्रश्नों को कवि न्हानालाल ने अपने काव्यों और नाटकों में सुलझाये हैं । कवि प्रसाद पूर्ण रूपेण साहित्यिक तत्त्वज्ञानी और अंत में दार्शनिक प्रतीत होते हैं ।

राष्ट्रीय और आंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों का निरूपण दोनों कवियों ने किया है । कवि प्रसाद ने " कामायनी " में आधुनिक समाजवादी राज्यव्यवस्था के तत्त्व " संघर्ष " सर्ग में लक्ष्य किये हैं और कवि न्हानालाल ने " कुरुक्षेत्र " में " शरशय्या " काण्ड में । भावार्थ यह है कि दोनों की काव्यदृष्टि राष्ट्रीय और

आंतरराष्ट्रीय थी । दोनों कवियों में ऊर्ध्वमुखी जीवन चेतना की विशेषताएं थीं ।

भावों की अभिव्यक्ति में प्रसाद जी जितने कलापूर्ण और प्रभावशाली है उतने न्हानालाल नहीं माने जाते हैं । इतना अवश्य है कि न्हानालाल अपने नाटकों के क्षेत्र में प्रसादजी से भी अग्रसर कहे जा सकते हैं ; लेकिन यह हमारी विषय की परिधि से बाहर की वस्तु है । नाटकों में न्हानालाल की अभिव्यक्ति अत्यंत प्रवाहमयी और प्रभावशाली है । फिर भी काव्य के क्षेत्र में अभिव्यक्ति की समानता में यह कहा जा सकता है कि दोनों कवियों की काव्यकृतियों में साधारणीकरण की पर्याप्त मात्रा है ।

कवि प्रसाद " कामायनी " के माध्यम से समस्त विश्व को यह महान् संदेश दे रहे हैं कि :-

" यदि मानव मन, बुद्धि और हृदय में उचित संतुलन स्थापित कर के पारस्परिक भेदभाव को भुलाता हुआ प्रवृत्ति और निवृत्ति एवं भौतिकता और आध्यात्मिकता से समन्वित जीवन व्यतीत करेगा और बुद्धि के सदुपयोग द्वारा निरन्तर सत्कर्मों में संलग्न रहेगा, तो उसे सारा विश्व एक नीड के तुल्य प्रतीत होगा और वह स्वयं अखंड आनंद का अनुभव करता हुआ जगती के अन्य प्राणियों को भी सुखी एवं आनन्दमय बनाने में सफल सिद्ध होगा । अतः इस निराश, भयत्रस्त, भ्रमित एवं " चिर दग्ध दुखी वसुधा " को शान्ति और सुख की आशा बंधाता हुआ अखण्ड आनंद प्राप्ति का मंगलमय संदेश कवि दे रहा है । "[१]

कवि न्हानालाल ने भी उपरोक्त आशय से संबंधित संदेश " कुरुक्षेत्र " महाकाव्य के " शरशय्या " काण्ड में दिया है ।

oooooooooooooooo

१ डा० द्वारकाप्रसाद सक्सेना, कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन, चतुर्थ संस्करण, पृ० ४५२

जीवन में अनेक संघर्षों के झेलने के कारण प्रसाद जी धीर, गम्भीर और सौम्य थे। उनके ये लक्षण उनकी काव्य-कृतियों में और नाटकों में लक्षित होते हैं। आगे चलकर वे क्रमशः दार्शनिक बनते गये। यह तत्त्व " कामायनी " में प्रत्यभिज्ञादर्शन के अंतर्गत प्रतीत होता है। जिसके फलस्वरूप समन्वयवाद, समरसता और आनन्दवाद की ओर लक्ष्य किया गया है। न्हानालाल के अंतर में भक्तिभाव की तीव्रता के कारण उनकी यह एकाग्रता " हरिदर्शन " और " हरिसंहिता " में प्रतीत होती है। " प्रत्यभिज्ञादर्शन " के समकक्ष का वर्णन हमें " कुरुक्षेत्र " महाकाव्य के महासुदर्शन काण्ड के अंतर्गत प्रतीत होता है। दोनों कवियों ने भी आनन्दवाद को ही जीवन का परम ध्येय माना है।

कवि न्हानालाल का साहित्य विस्तार विपुल है। संभवतः यह कहा जा सकता है कि वे ६९ वर्ष तक जीवित रहे ; इसलिये आयुष्य अधिक प्राप्त करने पर अधिक साहित्यिक सेवाएं कर सकें। न्हानालाल ने भी काव्य, नाटक, निबंध, अनूदित ग्रन्थ आदि लिखे हैं। प्रसादजी की भी साहित्य सेवाएं अनेकविध है लेकिन यह हिन्दी जगत् का बडा दुर्भाग्य रहा कि उनका निधन ४६ वर्ष में हुआ, अन्यथा संभव है कि वे हमें " कामायनी " जैसी अनेक रचनाएं दे जाते। इन दोनों कवियों की पूरी रचनाओं पर शोध कार्य करना वडा विस्तृत अनुभव होने से उनकी एक विधा — काव्य — को ली है।

प्रस्तुत अध्ययन के द्वितीय अध्याय में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि इन दोनों महान काव्यकारों ने कविता के अतिरिक्त नाटक, निबन्ध, उपन्यास इन विधाओं में अपनी प्रतिभा और साधना का योग दिया। प्रसाद ने उपर्युक्त विधाओं के अतिरिक्त कहानियां भी लिखीं और हिन्दी कहानीकारों के बीच उनका स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण भी है। साहित्य साधना का यह पक्ष न्हानालाल से अछूता रहा। दूसरी ओर कवि न्हानालाल बहुत बड़ी संख्या में संस्कृत के नाटकों एवं उपनिषदों के गुजराती अनुवाद भी किये। निबंधों की दृष्टि से प्रसाद जी के निबंधों की संख्या भले ही अत्यल्प हो किन्तु उनका महत्त्व कुछ कम नहीं हैं। निबंधकार के

रूप में कवि न्हानालाल अपेक्षा कृत निर्बल कहे जा सकते हैं । किन्तु एक बात में वे प्रसाद जी से सर्वथा भिन्न है कि समकालीन साहित्यिक गतिविधियों का समूचे गुजरात में उन्होंने योग्यतापूर्वक संचालन किया था । प्रसाद जी का संकोच साहित्यिक नेतृत्व से उन्हें वंचित करता रहा ; जबकि न्हानालाल समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों का खुल कर नेतृत्व करते रहे । उपन्यास के क्षेत्र में दोनों की उद्देश्यात्मक दिशाएं भिन्न हैं । काव्य के अतिरिक्त इन दोनों कवियों का सब से महत्त्वपूर्ण योगदान नाट्य-साहित्य के क्षेत्र में है । अतः इस पर भी संक्षिप्त चर्चा यहां प्रासंगिक है ।

प्रसादजी ने दस नाटक लिखें । इस क्षेत्र में उनका योगदान हिन्दी साहित्य के इतिहास में युगीन महत्त्व रखता है जिस पर स्वतंत्र रूप से शोधपूर्ण अध्ययन भी किये जा चुके हैं । कवि न्हानालाल द्वारा रचित नाटकों की संख्या पंद्रह हैं । इनके नाटक उच्च कोटि की नाट्यकला के परिचायक है । यह अवश्य है कि दोनों ही साहित्यकारों की कम ही नाट्य कृतियां रंग मंच पर अवतरित हुई है । कदाचित् वे युगीन प्रवृत्तियों से मेल न खाती रही हों । न्हानालाल के नाटकों की भाषा भी कविताओं की भांति " डोलन-शैली " की विशेषता को लिये हुए है । अतः संक्षेप में कहा जाय तो दोनों कवियों के नाटक एक प्रकार से रचयिताओं के कवि व्यक्तित्वों से अनुप्राणित हैं । भाषा की यह विशेषता संभवतः उन्हें रंगमंचीय प्रयोगों से दूर रखती रही । यह उल्लेखनीय है कि कवि न्हानालाल के नाटकों पर भी शोधपूर्ण अध्ययन हो चुका है । भावी अध्ययन और अनुशीलन के दृष्टिकोण से लेखक को आशा है कि भविष्य में हिन्दी या गुजराती के अनुसन्धाता तुलनात्मक अध्ययन के इस पक्ष की ओर भी आकृष्ट होकर ज्ञान विस्तार और नये तथ्यों की खोज से पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करेंगे ।

००००००